पंकज गोबिंद मेधी की तीन कविताएं

अनुवादक : दिनकर कुमार
संपर्क : 9435103755

(1)

मेरा देश

शुभ्र बर्फ फेनिल लहर
मरुभूमि की हवा का मिट्टी के केनवस पर उकेरी गई मृण्मय पुत्तलिका

विजय की हर्षध्वनि में हरे अरण्य सफ़ेद बादल
यशस्या की छुअन के साथ क्षितिज पर गुलाबी पीली रोशनी

मेरा देश

सभ्यता की नारी के सफ़ेद वस्त्र की तरह नदी की धारा
सांस्कृतिक युवती की तरह उन्नत पर्वत का दमकता शिखर

पंछियों का कलरव पतंगे की सीटी वर्णमय जाति जनजाति के नृत्य
बिजली की कौंध बारिश का वस्त्र अनेकता के वाद्य के बीच एकता का छंद

मेरा देश

अग्नि वायु ईशान नैऋत भारतीयत्व में सराबोर ज्ञान की दीप्ति
दीपक की शिखा धूप का धुआं अध्ययन पिपासार्त तपस्या की व्याप्ति

पत्थर से पत्थर चीरकर पार कर आया है शस्य युग
वन के जीवों को अपना बनाकर घर के पालतू को संग रखकर

कई अभ्यागत आए हैं लिखी है टिप्पणी
कई हमलावर आए हैं सीने में घुसेड़ा है धारदार अस्त्र
कोई विजित कोई विजेता
आक्षेप हुंकार प्रजा हाहाकार भुलाकर की है मित्रता

मेरा देश

राजा आए चले गए
गणतंत्र आया ठहर गया

रूखा सूखा पानी झोल दास दासी
धन धनवंतरी ज्ञानी अनपढ़ कमजोर बाहुबली देश को कहते हैं मां

सुनहरे सरसों के खेत के ऊपर से उड़कर गया है भौंरे की तरह विमान
पल-पल का संदेशा लेकर आई है स्वदेश स्वजाति की ख़बर
झोला भरने के लिए साथ लाया है स्वर्ण धागा बुनने वाला रौद्र चरखा

मेरा देश

रोशन उदय भूलकर उपांत अयनांत
बदन ढक बदन सिकोड़ आहार निराहार में गुजरते निद्रामग्न निद्राहीन
देश की जनता गुण गाती है देश की तरफ से देश के अधीन

पानी के नीचे कांटे की राह पर दीमक की मिट्टी दूषित वायु
देश की जनता ठीक ही पहचानती है
देश दूष्य नहीं शासक मंद

मेरा देश

पेड़ काटने वाले काट रहे रोपने वाले रोप रहे ज्यादा
खाने वाले खा रहे नहीं खाने वाले देख रहे करने वाले कर रहे ज्यादा
पाने वाले पा रहे नहीं पाने वाले गिन रहे बांटने वाले बांट रहे ज्यादा
भिन्न वैषम्य प्रभेद मिटाने के लिए देश की भक्ति करो खुद से ज्यादा

उग्र की बेताबी संत्रास की लीला रोकने के लिए वध करो शोषण का
हत्या करो मेधाहीनता की फरेबी प्रवृत्ति का

युवक की बांह में अंकित कर दो कर्म उद्यम की पेशी
सीने में साहस चेहरे पर सफलता की मुस्कान

तुम्हारा मतलब देश नहीं देश मतलब हम
अपनी तोंद ऊंची करने के लिए क्यों सताते हो देश को
कौन तुम उन्मादित नर्तक परिचित घातक

देश मतलब गणतंत्र सबसे ऊपर सच
शासक आए चले गए
गणतंत्र आया ठहर गया

मेरा देश

(2)

जलियाँवाला बाग

अपने लहू को देश को किया है तत्पर
देश के लिए हमारा जीवन सरल से भी सरल

तुम लोगों ने भूलकर
हमारे लहू से रंगा है अपने हाथों को
लिखा है जलियांवाला बाग नाम वहां

हमारे जमे हुए लहू से ऊंगली पोछते हो
आंखों में लहू की कालिमा से उकेरी है आंखें
होठों पर पोता है हमारे लहू का चालीसा

नदी बहती है रोकी नहीं जा सकती
हमारी देह की शिरा उपशिरा देश की नदी

कई हमलावर आए गए
तुम लोग भी आए गए

हमारे लहू में रोपकर देशभक्ति का शौर्य
साबित किया भारतवर्ष सभ्यता का सूर्य

विश्व जीतने के लिए हमारा लहू अमोघ अस्त्र
हमारे लहू से देश को किया है तत्पर

(3)

वंदे मातरम

तुम्हारी वंदना करता हूं
हमारे घाम रक्त प्रवाह की अर्चना से

पुष्प शस्य से तुम्हारी वंदना करता हूं
तुम सजल श्यामल रंग से आहार के आधार

सरंजाम वासस्थान से तुम्हें पूजता हूं
तुम आश्रय निर्माण के समस्त संबल

रति आरती से तुम्हें निवेदित करता हूं

जन गण मन

तुम्हारी वंदना करता हूं
वंदे मातरम

तुमने हमें दिया है अलंघ्य साहस मृतिक भित्ति
पिपासा में दी है तरंगित लहर की विशाल उदारता
शुभ्र हिम ऊष्म भूरे कालीन पर
सख़्त कदम बढ़ाना सिखाया है
तपस्या की गुफा में दी है ज्ञान की वारिधि
संस्कृति की दीप्त कौशल से सभ्यता को सजाकर
हमें भारतीय होने के गौरव से मंडित किया है

तुम्हें देने के लिए इस लाचार के पास और कुछ नहीं

दिल से तुम्हारी वंदना करता हूं
वंदे मातरम

(परिचय : पंकज गोबिंद मेधी की कविताएं मूलतः असमिया भाषा की हैं, इसका हिंदी अनुवाद दिनकर कुमार द्वारा किया गया है। दिनकर कुमार असम के चर्चित असमिया-हिंदी अनुवादक एवं कवि हैं। वर्तमान में यह गुवाहाटी, असम में रहते हैं।)